



भारतीय ज्ञान परम्परा के सन्दर्भ में पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के समाधान का अध्ययन

नैमिष कुमार मिश्र

शोधार्थी

शिक्षा शास्त्र विभाग,

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. मणि जोशी (एसोसिएट प्रोफेसर)

शोध निर्देशिका

श्री जय नारायण मिश्र पी.जी. कॉलेज,

लखनऊ

सारांश

प्राचीन भारत में ऋषियों, मुनियों के द्वारा अनगिनत खोजें की गई हैं। जिसके लिए अधिक समय तक गहन अनुसंधान किया गया है। जो पूर्णरूप से वैज्ञानिक, तार्किक और प्रमाणित है। यही ज्ञान परम्परा के रूप में सतत चला आ रहा है। भारत में जितनी भी परम्परायें प्रचलित हैं उनका कोई न कोई वैज्ञानिक आधार है। यदि गहराई से चिन्तन और अध्ययन किया जाय तो उनका वैज्ञानिक आधार मिल भी जाता है। ये सभी परम्परायें किसी न किसी रूप में पर्यावरण से जुड़ी हुई हैं। जो पर्यावरण संरक्षण, अनुकूलन और टिकाऊ विकास की ओर अग्रसर करता है।

हमारे आस पास निर्जीव और सजीव तत्वों से बना ऐसा आवरण जो किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है जिसे पर्यावरण के नाम से जानते हैं। पर्यावरण में सजीव और निर्जीव दोनों घटक होते हैं। सजीव घटक में जीव जन्तु और पेड़ पौधे आते हैं। निर्जीव घटक में जल, जंगल, जमीन, हवा, आदि आते हैं। ये सभी किसी न किसी रूप में आपस में जुड़े हुए हैं।

तापमान और मौसम में होने वाला ऐसा बदलाव जो दीर्घकालिक हो ऐसे बदलाव को जलवायु परिवर्तन के नाम से जानते हैं। जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक भी हो सकता है और कृत्रिम भी हो सकता है। कुछ समय से कृत्रिम जलवायु परिवर्तन को अधिक देखा जा रहा है जो बहुत ही हानिकारक है। वास्तव में कृत्रिम जलवायु परिवर्तन के लिए मानवीय गतिविधियां जिम्मेदार हैं।

पर्यावरण ही जीवन का आधार है। पर्यावरण की स्वच्छता बनाये रखने में ही सम्पूर्ण विश्व की भलाई है। आज पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यापक स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है। इसके लिए कई स्तर पर कर्तव्यों का निर्वहन करना होगा। यह कार्य व्यक्ति, परिवार, समाज और सरकार सभी स्तरों पर करना होगा।

आज आधुनिक और भौतिक युग में आगे बढ़ने की होड़ सी लगी हुई है। हर कोई भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त कर लेना चाहता है। जिसकी भूख इतनी तीव्र है जिसकी चाहत में कितना भी नुकसान क्यों न हो जाय? जिसकी परवाह ही नहीं है। ऐसे में आने वाले समय में सम्पूर्ण विश्व के पर्यावरण और जीवन को बहुत बड़ा खतरा है। ऐसी स्थिति में इसके

समाधान की बहुत बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए कोई भी युक्ति समझ में नहीं आ रही है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परम्परा ही एक मात्र सहारा है।

बीज शब्द — भारतीय ज्ञान परम्परा, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, संरक्षण, समाधान

प्रस्तावना

ज्ञान वो अमृत है जिसे जो ग्रहण करता है वही एहसास कर सकता है। जो भारत के जनमानस के मन मस्तिष्क में रचा बसा हुआ है और सम्पूर्ण विश्व के जनमानस को प्रभावित किया है। प्राचीन भारत में ऋषियों, मुनियों के द्वारा अनगिनत खोजों की गई हैं। जिसके लिए अधिक समय तक गहन अनुसंधान किया गया है। जो पूर्णरूप से वैज्ञानिक, तार्किक और प्रमाणित है। यही ज्ञान परम्परा के रूप में सतत चला आ रहा है। प्राचीन और स्वदेशी भारतीय ज्ञान जो परम्परा के रूप में सतत चला आ रहा है जिसे “भारतीय ज्ञान परम्परा” के नाम से जानते हैं।

“पर्यावरण” जल, जंगल, जमीन, हवा और जीव जन्तु, पेड़ पौधों, इनके सम्बन्धों को दर्शाता है। हमारे आस पास निर्जीव और सजीव तत्वों से बना ऐसा आवरण जो किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है जिसे पर्यावरण के नाम से जानते हैं। पर्यावरण में सजीव और निर्जीव दोनों घटक होते हैं। ये सभी किसी न किसी रूप में आपस में जुड़े हुए हैं।

हम सभी “मौसम” और “जलवायु” जैसे शब्दों को अक्सर ही सुनते आये हैं जिससे इनके महत्व को समझा जा सकता है। वास्तव में मौसम वातावरण की तात्कालिक स्थिति को कहते हैं और वातावरण की दीर्घकालिक औसत स्थिति को जलवायु कहते हैं। तापमान और मौसम में होने वाला ऐसा बदलाव जो दीर्घकालिक हो ऐसे बदलाव को “जलवायु परिवर्तन” के नाम से जानते हैं। जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक भी हो सकता है और कृत्रिम भी हो सकता है। कुछ समय से कृत्रिम जलवायु परिवर्तन को अधिक देखा जा रहा है जो बहुत ही हानिकारक है। वास्तव में कृत्रिम जलवायु परिवर्तन के लिए मानवीय गतिविधियां जिम्मेदार हैं। जिसके कई कारण हो सकते हैं।

“संरक्षण” वो शब्द है जो रक्षा, उपयोग और सन्तुलन को समाहित करता है। यहां बात हो रही है पर्यावरण संरक्षण की जिसके लिए आवश्यक है पर्यावरण की रक्षा करना, संसाधनों का हानिरहित उपयोग करना, पारिस्थितिकीय सन्तुलन बनाये रखना। आज पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यापक स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है।

प्रदूषण दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है जिसके कारण पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। जिससे जलवायु परिवर्तन का खतरा बढ़ता जा रहा है। ऐसे में इसका समाधान ही एक मात्र उपाय है। यहां पर प्रश्न यह उठता है कि पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या का समाधान क्या हो सकता है? इस प्रश्न का उत्तर खोजने में हर कोई लगा हुआ है। लेकिन सटीक उत्तर किसी के पास भी नहीं है ऐसा प्रतीत हो रहा है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परम्परा ही एक मात्र सहारा है।

भारतीय ज्ञान परम्परा

ज्ञान वो अमृत है जिसे जो ग्रहण करता है वही एहसास कर सकता है। जो भारत के जनमानस के मन मस्तिष्क में रचा बसा हुआ है और सम्पूर्ण विश्व के जनमानस को प्रभावित किया है। प्राचीन भारत में ऋषियों, मुनियों के द्वारा अनगिनत खोजों की गई हैं। जिसके लिए अधिक समय तक गहन अनुसंधान किया गया है। जो पूर्णरूप से वैज्ञानिक, तार्किक और प्रमाणित है। यही ज्ञान परम्परा के रूप में सतत चला आ रहा है। प्राचीन और स्वदेशी भारतीय ज्ञान जो परम्परा के रूप में सतत चला आ रहा है जिसे “भारतीय ज्ञान परम्परा” के नाम से जानते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा के स्रोत निम्नलिखित हैं— वेद, उपवेद, वेदान्त, उपनिषद्, पुराण, उपपुराण, स्मृतियाँ, रामायण, महाभारत, गीता, दर्शनशास्त्र, विमानशास्त्र, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, इतिहास, भूगोल, खगोलशास्त्र, चिकित्साशास्त्र: आयुर्वेद, योग, आहार विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, नैतिक विज्ञान, संस्कृति, संस्कार, व्यवहार, रीति—रिवाज, रहन—सहन, जीवन शैली, आदि।

भारतीय ज्ञान परंपरा का पर्यावरणीय आधार

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल स्वरूप प्रकृति—केंद्रित रहा है। यहाँ मानव को प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका अभिन्न अंग माना गया है। वेदों और उपनिषदों में प्रकृति के प्रति श्रद्धा, संतुलन और सहअस्तित्व का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में पृथ्वी को 'माता' कहकर संबोधित किया गया है, जो पर्यावरणीय नैतिकता का प्राचीन आधार प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार ऋग्वेद में जल, वायु, अग्नि, सूर्य आदि प्राकृतिक तत्वों को देवत्व प्रदान कर उनके संरक्षण का संदेश दिया गया है।

भारतीय दार्शनिक दृष्टि में 'पंचमहाभूत'—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—सृष्टि के मूल तत्व माने गए हैं। यह सिद्धांत पारिस्थितिक संतुलन की अवधारणा से मेल खाता है। भगवद्गीता में 'यज्ञ' को प्राकृतिक चक्रों की निरंतरता से जोड़ा गया है, जो संसाधनों के संतुलित उपयोग और पुनर्भरण का प्रतीक है।

आयुर्वेद ग्रंथों, विशेषतः चरक संहिता में मानव स्वास्थ्य को ऋतु, जलवायु और पर्यावरणीय कारकों से जोड़ा गया है। यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरण स्वास्थ्य विज्ञान से साम्य रखता है। प्राचीन भारत में जल संचयन, वनों का संरक्षण, पवित्र उपवन तथा सामुदायिक संसाधन प्रबंधन जैसी परंपराएँ सतत विकास के व्यावहारिक उदाहरण हैं।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा का पर्यावरणीय आधार केवल धार्मिक या सांस्कृतिक मान्यता नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ संतुलित सहअस्तित्व, संसाधनों के संयमित उपयोग और भावी पीढ़ियों के प्रति उत्तरदायित्व की वैज्ञानिक एवं नैतिक चेतना पर आधारित है। यह दृष्टि आज के पर्यावरण संकट और जलवायु परिवर्तन के समाधान हेतु अत्यंत प्रासंगिक है।

पर्यावरण

“पर्यावरण” शब्द को हम सभी अक्सर सुनते आये हैं जो जल, जंगल, जमीन, हवा और जीव जन्तु, पेड़ पौधों, इनके सम्बन्धों को दर्शाता है। हमारे आस पास निर्जीव और सजीव तत्वों से बना ऐसा आवरण जो किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है जिसे पर्यावरण के नाम से जानते हैं। पर्यावरण में सजीव और निर्जीव दोनों घटक होते हैं। सजीव घटक में जीव जन्तु और पेड़ पौधे आते हैं। निर्जीव घटक में जल, जंगल, जमीन, हवा, आदि आते हैं। ये सभी किसी न किसी रूप में आपस में जुड़े हुए हैं। पर्यावरण के मुख्य रूप से चार घटक माने जाते हैं — स्थलमण्डल, जलमण्डल, वायुमण्डल, जैवमण्डल।

पर्यावरण को प्रभावित करने वाले कारक

पर्यावरण को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं — अनियन्त्रित पेड़ पौधों की कटाई; जल जंगल जमीन का दिन प्रतिदिन कम होना; तालाब, कुआँ और नदी का धीरे धीरे समाप्त होना; खेती के लिए अधिक से अधिक रासायनिक खादों का उपयोग; खेती के लिए अधिक से अधिक कीटनाशकों का उपयोग; बढ़ता औद्योगीकरण; प्रदूषण; प्राकृतिक के बजाय कृत्रिम विधियों को अपनाना; आधुनिकता के नाम पर वैज्ञानिकता से दूर होना; पर्यावरण के प्रति जनमानस का उदासीन होना।

जलवायु परिवर्तन

मौसम वातावरण की तात्कालिक स्थिति को कहते हैं और वातावरण की दीर्घकालिक औसत स्थिति को जलवायु कहते हैं। तापमान और मौसम में होने वाला ऐसा बदलाव जो दीर्घकालिक हो ऐसे बदलाव को “जलवायु परिवर्तन” के नाम से जानते हैं। जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक भी हो सकता है और कृत्रिम भी हो सकता है। कुछ समय से कृत्रिम जलवायु परिवर्तन को अधिक देखा जा रहा है जो बहुत ही हानिकारक है। वास्तव में कृत्रिम जलवायु परिवर्तन के लिए मानवीय गतिविधियां जिम्मेदार हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण

जलवायु परिवर्तन के मूल कारणों में ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन है। पृथ्वी सूर्य की ऊष्मा से गर्म होने के बाद ठण्डी होती है उसके बाद पृथ्वी से ऊष्मा बाहर विसरित होती है। लेकिन वायुमण्डल में उपस्थित कुछ गैसों ऐसा आवरण बनाती हैं जो इस ऊष्मा को बाहर जाने से रोकता है और ऊष्मा का कुछ भाग अवशोषित कर शेष भाग को पुनः वापस भेज देता है। ऐसी ऊष्मा रोधी गैसों को “ग्रीनहाउस गैस” कहते हैं। ये ग्रीनहाउस गैस हैं— कार्बन डाइऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरो कार्बन, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, आदि। ग्रीन हाउस गैस के प्रभाव से वायुमण्डल के तापमान में वृद्धि हो जाती है जिसे “ग्रीनहाउस प्रभाव” कहते हैं। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के मुख्य कारण हैं — पेट्रोलियम ईंधन का दहन, वनों की अनियन्त्रित कटाई, औद्योगीकरण, कृषि, वाहन। अन्य कारण हैं — अनियन्त्रित पेड़ पौधों की कटाई, बढ़ता औद्योगीकरण, प्रदूषण, प्राकृतिक के बजाय कृत्रिम विधियों को अपनाना, जीवाश्म ईंधन का उपयोग।

पर्यावरण संरक्षण

आज बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौती सम्पूर्ण विश्व के समक्ष खड़ी है। ऐसे में सभी का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की ओर जाना लाजमी है। “संरक्षण” वो शब्द है जो रक्षा, उपयोग और सन्तुलन को समाहित करता है। यहां बात हो रही है पर्यावरण संरक्षण की जिसके लिए आवश्यक है पर्यावरण की रक्षा करना, संसाधनों का हानिरहित उपयोग करना, पारिस्थितिकीय सन्तुलन बनाये रखना।

संरक्षण के उपाय

आज पर्यावरण संरक्षण की विशेष आवश्यकता है। इसके लिए विभिन्न स्तर पर उपाय करने होंगे। पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत स्तर पर उपाय करने होंगे। सामाजिक स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक करने की आवश्यकता है। आज पर्यावरण संरक्षण के लिए सरकारी स्तर पर उपाय करने की आवश्यकता है। ये उपाय निम्नलिखित हैं — पर्यावरण संरक्षण के लिए नीति बनाना, पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान चलाना, पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रलोभन देना, पौधों का रोपण और संरक्षण अनिवार्य करना, पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यकता के अनुसार धन खर्च करना, पर्यावरण संरक्षण के विषय में शिक्षा देना।

भारतीय ज्ञान परम्परा के सन्दर्भ में पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के समाधान का विश्लेषणात्मक अध्ययन

आज जितनी भी परम्पराएं प्रचलित हैं उनका कोई न कोई वैज्ञानिक आधार है। यहां पर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन परम्पराओं का वैज्ञानिक आधार होने के साथ पर्यावरणीय आधार भी है। जिसमें पर्यावरण अनुकूलन, संरक्षण जैसे तत्व समाहित हैं। जो टिकाऊ विकास की ओर लेकर जाता है। जब तक लोग भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़े रहे तब तक पर्यावरण अनुकूल होने के साथ संरक्षित रहा और टिकाऊ विकास की ओर बढ़ते रहे। जिसका परिणाम यह रहा लोग

स्वस्थ रहे, पर्यावरण स्वच्छ रहा, पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी कोई समस्या नहीं रही। जब से लोग भारतीय ज्ञान परम्परा से दूर होते गये तब से पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या भी बढ़ती गई। दिन प्रति दिन यह समस्या बढ़ती ही जा रही है।

आज आधुनिक और वैज्ञानिक होने का ऐसा दम भरा जाता है कि जैसे इसके पहले विज्ञान का कोई अस्तित्व ही नहीं था। जब कि इसके पहले रहन सहन, जीवन शैली, आदि सब कुछ वैज्ञानिक और पर्यावरणीय था। वहीं आज इनका विज्ञान से दूर दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है। जिससे अज्ञानता और अवैज्ञानिकता की ओर बढ़ते जा रहे हैं। जिसे कई उदाहरणों से समझा जा सकता है। भारतीय ज्ञान परम्परा में जल रखने के लिए मिट्टी और तांबे के पात्र का उपयोग किया जाता रहा है। ऐसे जल का ग्रहण करना बहुत ही स्वास्थ्यवर्धक है। जिसे छोड़कर आज जल को रखने के लिए कुछ ऐसे पत्रों का उपयोग किया जा रहा है जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है। प्राचीन भारत में तापमान को नियन्त्रित करने की विधियां प्रचलन में रहीं हैं। जिससे पर्यावरण प्रदूषणरहित और स्वच्छ रहता है। जब कि आज तापमान को नियन्त्रित करने के लिए रेफ्रिजरेटर का उपयोग किया जाता है जिससे ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन होता है। जो जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में ब्रह्म मुहूर्त का बहुत बड़ा महत्व है। ये वो समय होता है जब ऑक्सीजन प्रचुर मात्रा में रहती है। जब कि आज इसका महत्व कम होता जा रहा है। भारतीय ज्ञान परम्परा में गौ आधारित प्राकृतिक खेती का उपयोग किया जाता है। जिससे पर्यावरण स्वच्छ रहता है। जब कि आज खेती के लिए ऐसी विधियों का उपयोग किया जा रहा है जिससे पर्यावरण को बहुत बड़ा खतरा है। भारतीय ज्ञान परम्परा में ऐसे पेड़ पौधों का बहुत बड़ा महत्व है जो पर्यावरण को स्वच्छ करने और पारिस्थितिकीय सन्तुलन को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये पेड़ हैं— पीपल, बरगद, पाकड़, आदि। जब कि आज ऐसे पेड़ों का महत्व कम होता जा रहा है। ऐसे उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा वैज्ञानिक और पर्यावरण के अनुकूल है। जिसमें पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

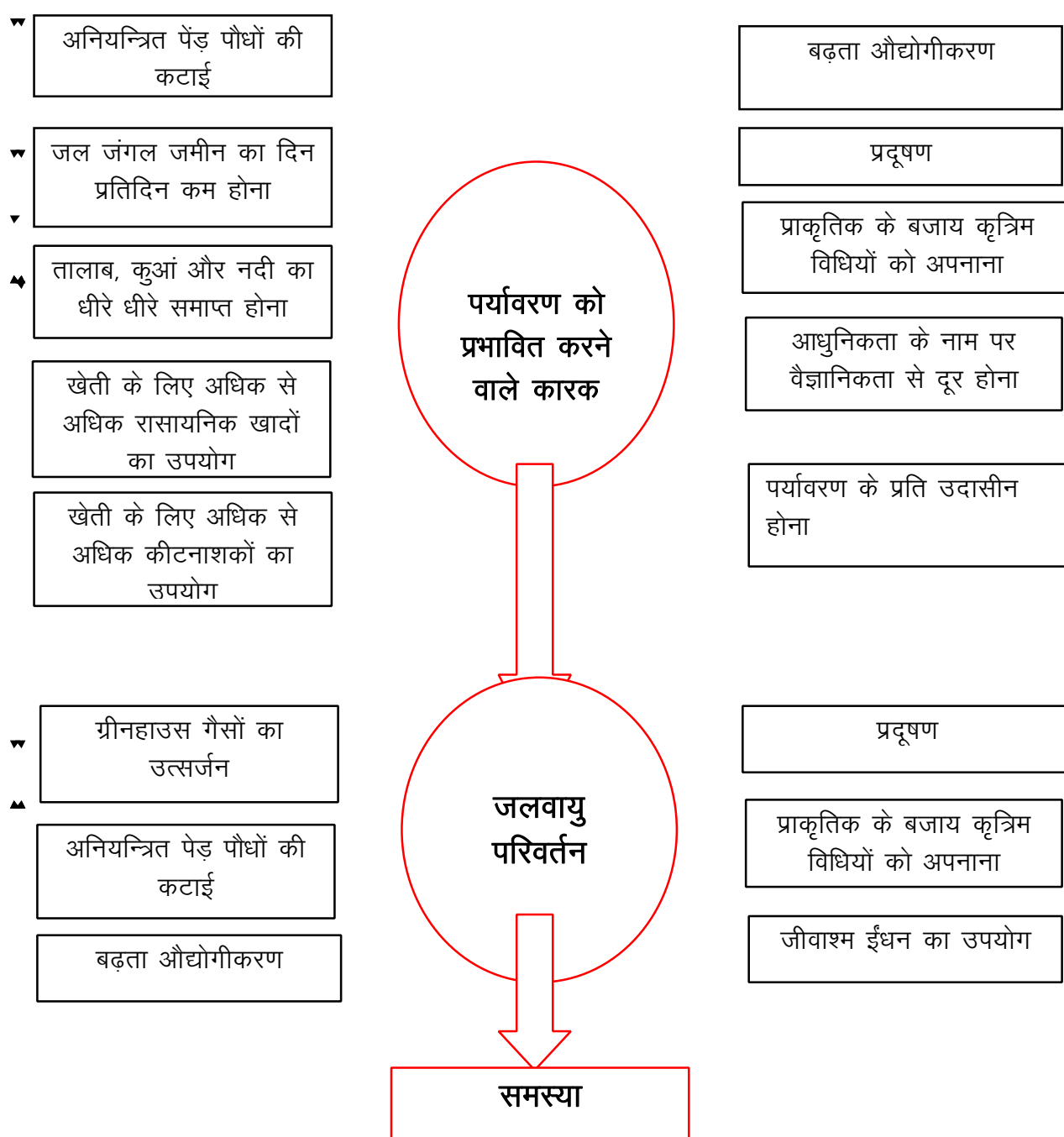
आज आधुनिक और भौतिक युग में आगे बढ़ने की होड़ सी लगी हुई है। हर कोई भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त कर लेना चाहता है। जिसकी भूख इतनी तीव्र है जिसकी चाहत में कितना भी नुकसान क्यों न हो जाय? जिसकी परवाह ही नहीं है। ऐसे में आने वाले समय में सम्पूर्ण विश्व के पर्यावरण और जीवन को बहुत बड़ा खतरा है। जिसकी शुरुआत दिख भी रही है। ऐसी स्थिति में इसके समाधान की बहुत बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए कोई भी युक्ति समझ में नहीं आ रही है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परम्परा ही एक मात्र सहारा है। यह ऐसा ज्ञान है जो पर्यावरण संरक्षण, अनुकूलन और टिकाऊ विकास की ओर अग्रसर करता है। जो ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित है। जिसमें पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं का समाधान छुपा हुआ है। बस इसे अपनाये जाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

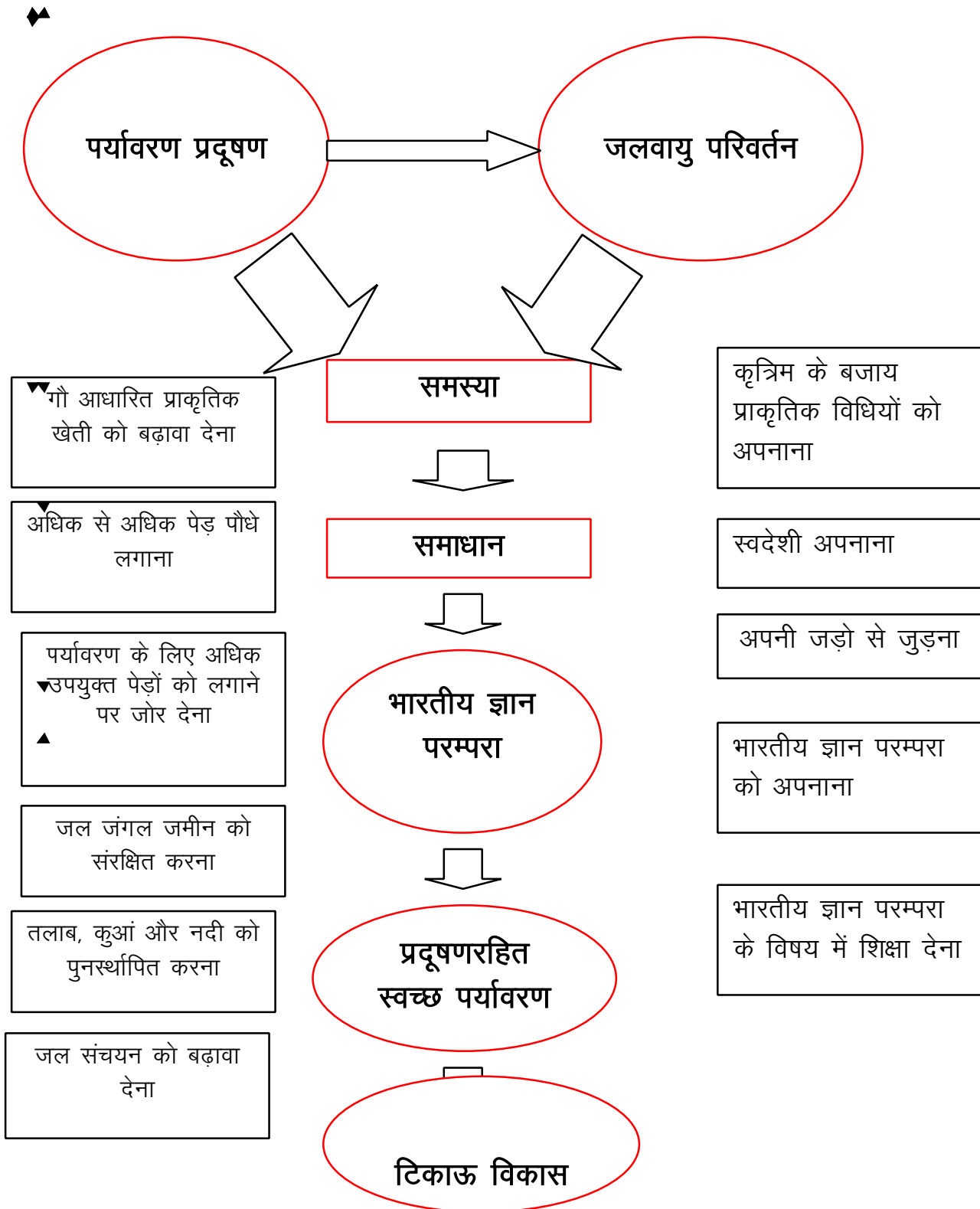
पर्यावरण को प्रभावित करने में मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियां जिम्मेदार हैं। जिसके कारण पर्यावरण प्रदूषण होता है। यही जलवायु परिवर्तन का कारण बनता है। जिसका समाधान भारतीय ज्ञान परम्परा में है। जो पर्यावरण संरक्षण, अनुकूलन और टिकाऊ विकास की ओर अग्रसर करता है। भारत में जितनी भी परम्परायें प्रचलित हैं उनका कोई न कोई वैज्ञानिक आधार है। सभी परम्परायें किसी न किसी रूप में पर्यावरण से जुड़ी हुई हैं। जो पर्यावरण संरक्षण, अनुकूलन और टिकाऊ विकास की ओर अग्रसर करता है। स्वच्छ पर्यावरण ही जीवन का आधार है। पर्यावरण में सजीव और निर्जीव दोनों घटक होते हैं जो किसी न किसी रूप में आपस में जुड़े हुए हैं। पर्यावरण दिन प्रति दिन प्रदूषित होता जा रहा है जिसके कई

कारण हैं। पर्यावरण प्रदूषित होने के कारण जलवायु परिवर्तन का खतरा बढ़ता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन के लिए मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियां जिम्मेदार हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक है पर्यावरण की रक्षा करना, संसाधनों का हानिरहित उपयोग करना, पारिस्थितिकीय सन्तुलन बनाये रखना। पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक और सरकारी स्तर पर उपाय करने की आवश्यकता है। पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन का समाधान भारतीय ज्ञान परम्परा के सन्दर्भ में है। मानवीय गतिविधियों से पर्यावरण प्रदूषण होता है जो जलवायु परिवर्तन का कारण बनता है। पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन का समाधान भारतीय ज्ञान परम्परा में छुपा है। भारतीय ज्ञान परम्परायें पर्यावरण संरक्षण, अनुकूलन और टिकाऊ विकास की ओर अग्रसर करती हैं।

पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन का रेखाचित्र



पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के समाधान का रेखाचित्र



सुझाव

आज सम्पूर्ण विश्व के समक्ष पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की समस्या चुनौती बनकर खड़ी हुई है। यह ऐसी समस्या है जिसका समाधान कैसे होगा? इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं है। ऐसे में इस समस्या के समाधान के लिए एक मात्र सहारा भारतीय ज्ञान परम्परा ही है। आज आवश्यकता है भारतीय ज्ञान परम्परा को अधिक से अधिक बढ़ावा दिया जाए। यह तभी सम्भव है जब इसे प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा स्तर में सम्मिलित किया जाए। इसके साथ ही भारतीय ज्ञान परम्परा के विषय में अधिक से अधिक शोध कार्य को बढ़ावा दिया जाए।

सन्दर्भ सूची

- Anand, S., & Sonar, R. M. (2025). Traditional knowledge research in India: A bibliometric-based review and thematic analysis. *Indian Journal of Traditional Knowledge*, 24(3). <https://doi.org/10.56042/ijtk.v24i3.9491>
- Bhardwaj, S. G., & Gopal, K. R. (2025). Traditional Indian Knowledge Systems in Environmental Sustainability. *International Journal of Multidisciplinary Global Research*, 2(4a), 88–94.
- Dudve, K. S., & Tripathi, L. K. (2025). Indian Knowledge Systems in resource management: Bridging ancient wisdom with sustainable development goals (SDGs). *Accent Journal of Economics Ecology & Engineering*, 10(2), 273–279.
- IPCC. (2023). *Climate Change 2023: Synthesis Report*. Intergovernmental Panel on Climate Change.
- Khairnar, M. S. (2025). Interrelations between Indian Knowledge System (IKS) and Environmental Law. *International Journal of Scientific Research in Science and Technology*. <https://doi.org/10.32628/IJSRST251306>
- Kumar, P., & others. (2021). Traditional ecological knowledge and climate adaptation strategies in India. *Journal of Environmental Studies and Sciences*, XX(X).
- National Communication to UNFCCC (2023). *India's Third National Communication*. Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India.
- NITI Aayog. (2022). *India Climate and Energy Dashboard Report*. Government of India.
- Patel, V., & Desai, M. (2025). Indian knowledge traditions and climate ethics. *Asian Journal of Environmental Studies*, 12(1), 22–38.
- Sahu, O. P., Singh, V., Sahu, P., & Dvivedi, S. (2025). प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में जल संसाधनों का महत्व, संरक्षण एवं प्रबंधन- *International Journal of Geography, Geology and Environment*, 7(10), Part A.
- Sharma, A. (2023). Traditional ecological knowledge and sustainable development in Indian context. *Environmental Sustainability*, 6(2), 145–158.
- Singh, R., & Singh, P. (2022). Indigenous knowledge systems and climate resilience in India. *Journal of Environmental Management*, 320, 115–130.
- Waghmode, A. V., Shinde, H. P., & Chippalakatti, P. (2025). Indigenous traditional ecological knowledge for mitigating climate change hazards: Resilience from the roots. *Asian Journal of Environment & Ecology*, 24(8), 95–106. <https://doi.org/10.9734/ajee/2025/v24i8775>